International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 590-591

भारतीय संस्कृति के लिए बृज प्रदेश का योगदान

आरती वर्मा

MA, Ph.D., Department of History, Dr. Bhimrao Ambedkar University, Agra, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति को यह गौरव प्राप्त है कि यहाँ पर सभी धर्म सम्प्रदायों का विकास हुआ था और यह धार्मिक संस्कृति विभिन्न कालों से देश के अधिकाश: भागों को प्रभावित करती आ रही है।

बृज की संस्कृतिक का भौतिक आधार तथा इसकी मूल चेतना धर्म पर ही निर्भर है। बृज की संस्कृति का मूल रुप, धार्मिक भावना को ही प्रेरित करता है। इस संस्कृति में प्रमुख तत्व स्नेह, सौहार्द, सेवा, समर्पण और समन्वय व सामंजस्य से परिपूर्ण है जो कि कृष्णोपासना की पृष्ठ भूमि में पल्लवित होकर फल-फूल रहे हैं।

बृज प्रदेश विभिन्न धर्मों की संगम स्थली रहा है बृज में जैन व बौद्ध धर्मों का प्रभाव उस समय बढ़ गया था जब कृष्णोपासना और बृज संस्कृति पर इन दोनों धर्मों का प्रभाव पड़ा था उस समय में जैन धर्म, बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों तथा स्तूप-चैत्य, संधाराओं की स्थापना की गयी थी।

जैन धर्म की दृष्टी से मथुरा नगरी का महत्व बहुत अधिक था। जैन धर्म के लोग यहाँ के निवासियों के साथ बिना किसी संघर्ष से निवास करते थे। "अंगुत्तर निकाय " में बताया है कि भगवान बुद्ध स्वंय मथुरा आये थे और उन्होनें यहाँ पर पाँच दोष पाये थे। मथुरा के राजा अविन्तपुत्र ने बौद्ध धर्म को स्वीकार किया था। भगवान बुद्ध के बाद यहाँ पर महाकात्यायन मथुरा आये थे व उन्होनें भी इस धर्म को स्वीकार किया था। अत: बौद्ध धर्म जैन धर्मों की दृष्टि से मथुरा मण्डल का प्राचीन समय में अपना एक विशेष महत्व था।

कुषाण काल में जैन धर्म का बहुत विकास हुआ और मथुरा कला में अनेक जैन मूर्तियाँ बनायी गयी जिनमें से तीर्थांकरों की मूर्तियाँ जैसे आदिनाथ, नेमीनाथ, पाश्र्वनाथ, महावीर स्वामी आदि तीर्थांकरों की मूर्तियाँ मिली हैं इनमें से नेमीनाथ की अक्षणी, अम्बीका और ऋषभनाथ की चकरश्रेणी की मूर्तियाँ प्रमुख हैं इससे यह प्रतीत होता है कि बृज प्रदेश में जैन संस्कृति के अन्तर्गत महिलाओं का विशेष स्थान था।

प्राचीन समय में यहाँ पर एक बौद्ध स्थान था जहाँ पर महाविद्या नाम की एक बौद्ध देवी थी। जैन धर्म में सिंहवाहना अंबिका देवी की मान्यता मानी जाती थी। भगवान गौतम बुद्ध ने यहाँ पर अपने उपदेश भी दिये थे। प्राचीन समय में बृज संस्कृति के अन्दर जैन और बौद्ध धर्मों का बोल-बाला था।

गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी के अतिरिक्त यहाँ पर केशव, कश्मीरी, माघवेनद्र, बल्लभ, चैतन्य, हरीवंश, हरीदास, विट्ठल आदि धर्मोचार्यों और संत-महात्माओं के कारण बृज संस्कृति में एक नवीन रुप का उदय हुआ था जिससे समस्त देश में नव-जीवन का संचार हुआ था।

प्राचीन समय में बृज प्रदेश में अनेकों उतार-चढ़ाव आये लेकिन फिर भी यहाँ की संस्कृति में काफी उन्नति हुई थी।

बौद्ध धर्म की मूर्तियों से यह आभास होता है कि बृज प्रदेश में जहाँ एक ओर बलराम आदि देवों को प्रमुख स्थान दिया जाता था वहीं दूसरी ओर बोधिसत्व का प्रचार भी अपने उत्कर्ष पर था।

बृज प्रदेश में नाग मूर्तियों के मिलने से इस बात का भी आभास होता है कि यहाँ पर नाग धर्म भी प्रचलित था। शक कुषाण शासकों के काल में जो मूर्तियाँ मिली हैं उन मूर्तियों में हम भारतीय इतिहास और संस्कृति का समन्वय देखते हैं।

बृज प्रदेश सांस्कृतिक क्षेत्र के अन्तर्गत और भी अनेक कलाओं का विकास हमें देखने को मिलता है जिनमें से संगीत कला, मूर्ति कला, चित्र कला, स्थापत्य काल, साहित्य, नृत्य कला आदि प्रमुख हैं इन सभी कलाओं ने बृज संस्कृति में अपनी एक अनोखी पहचान बनायी है जो कि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय को छू जाती है।

बृज संस्कृति को यदि हम एक विशाल वृक्ष की उपमा देते हैं तो इस संस्कृति रुपी वृक्ष की ये सभी कलाऐं (संगीत, नृत्य, स्थापत्य, चित्र कला, साहित्य) शाखाऐं हैं जो बृज प्रदेश के इस सांस्कृतिक क्षेत्र को अन्य स्थानों तक फैलाऐ हुए हैं।

बृज की इन सभी कलाओं के कारण ही बृज प्रदेश संस्कृति का एक सुंदर प्रतीक बन गया और बृज संस्कृति के अंदर आज भी कलाऐं नये रुप में विकसित हो रही हैं।

बृज संस्कृति वस्तुत: "सत्य – शिव - सुन्दरम" की भावना को हमारे हृदय में उजागर करती रहती है। इसलिए भारतीय इतिहास में बृज की संस्कृति को अखिल भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत सर्वोत्तम स्वरुप कहा गया है।

विशेष रुप से मध्य काल में धर्म, संगीत कला, मूर्ति कला, चित्र कला, स्थापत्या कला आदि कलाओं का विकास हुआ जिससे बृज संस्कृति का महत्व दिनों – दिन बढ़ने लगा था। कृष्ण की रास लीला के कारण ही बृज प्रदेश के मध्य युग में नृत्य – नाटय कला का भी विकास हुआ था। इस समय में कविदास, नरोत्तमदास ठाकुर, ब्रज बल्लभ, श्री बल्लभाचार्य जी, हित हरिवंश जी, स्वामी घमंडदेव जी, नारायण भट्ट जी, गो0 विट्ठलनाथ जी आदि भक्त जन हुए थे।

वास्तव में बृज संस्कृति अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त करके बृज साहित्य की विविध विधाओं को अपनाकर अखिल भारतीय साहित्य की अभिव्यक्ति का सबल माध्यम बन गयी थी तथा इस कलात्मकता के कारण ही यह संस्कृति कलात्मक मधुरता से पूरी तरह युक्त हो गयी थी व साहित्य और भाषा के अनुरुप ही इस बृज संस्कृति ने अपनी सत्ता व महत्ता को पूर्णरुप से साबित कर दिया था।

बृज की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि गरिमामयी रही है, अनेक विदेशी आक्रांताओं के आक्रमणों के उपरान्त भी इस बृज प्रदेश ने न केवल भारत वर्ष को अपितु समस्त विश्व को अपनी ओर आकर्षित किया है। यही कारण है कि इसकी सांस्कृतिक

उपलब्धियाँ आज तक अक्षुण हैं तथा इन्होनें सारे विश्व को धर्म, सांस्कृतिक व कृष्णमय प्रेम का संदेश दिया है।

बृज संस्कृति एक रुप से आध्यात्मिक संस्कृति भी है जिसे संघ – संस्कृति भी कहा जाता है।

सन्दर्भ

1. श्री राम नारायण अग्रवाल : बृज लोक।
2. श्री प्रभुदयाल मित्तल : बृज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, पृ0 47।
3. श्री कृष्ण दत्त वाजपेयी : बृज लोक संस्कृति।
4. श्री उमा भास्कर : मथुरा महत्व।
5. झारखण्डे चौबे एवं डॉ0 कन्हैया लाल श्रीवास्तव : मध्ययुगीन भारती समाज एवं संस्कृति (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनउ, 1979)।
6. महाराजकुमार : (ब्रज), मुगलकालीन ब्रज प्रदेश, 1536 – 1537 ई0 अखिल भारतीय मण्डल, मथुरा।
7. एफ0 एस0 ग्राउस : मथुरा-ए-डिस्ट्रिक्ट मेमोयर 1874।
8. एफ0 एस0 ग्राउस : मथुरा मेमोयर्स, डिस्ट्रिक्ट गजेटियर,1873 ई0।
9. विलियम डर्विन : (मुगल) लेटर मुगल्स खण्ड 1-2, सम्पादक डॉ0 जदुनाथ सरकार।